ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(11): 959-962
www.allresearchjournal.com
Received: 18-08-2015
Accepted: 19-09-2015

डॉ. सुरेश कुमार
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, कोनी,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

Correspondence
डॉ. सुरेश कुमार
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, कोनी,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

वर्तमान सन्दर्भ में गुरू घासीदास जी के उपदेश एवं उनकी प्रासंगिकता

डॉ. सुरेश कुमार

हिन्दुस्तान के हृदय में स्थित छत्तीसगढ़ का अतीत सांस्कृतिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से वैभव संपन्न रहा है | युगानुरूप प्रत्येक उत्थान एवं पतन को आत्मसात किया है समय के साथ राजनीतिक अस्थिरता, प्रशासनिक अव्यवस्था, अन्याय, अत्याचार शोषण, दमन, सामाजिक विषमता बढते गए | पर्दा प्रथा, सती प्रथा, बल विवाह, दहेज़ प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, सत्ता के लिए खून की होली जैसे कार्यों ने समाज को सर्वाधिक आहत किया | आलस्य एवं चाटुकारिता का वातावरण बन गया था कि भारत का भविष्य अंधकारमय हो गया था | ऐसी अंधकारमयी रातों को अलौकिक तेज से भरे सूरज की प्रतिक्षा थी | जो भारत में नया उजाला,नयी क्रांति,नव विहान ला सके | आवश्यकता थी ऐसे मसीहा की जो संकट की इस घड़ी में अपनी फौलादी इच्छाशक्ति के सहारे चट्टान की भांति सुदृढ़ एवं अविचलित खड़ा रहे | जो अपनी कमजोरियों पर विजय पाकर दुसरों को आत्मोन्नति का रास्ता दिखा सके, जिसका जीवन स्वहित के लिए नहीं अपितु परहित के लिए हों | ऐसे सपूत की भारत माता को आन पड़ी थी | भारत माता ने संत शिरोमणि रायपुर जिला के गजेटियर (1973) के अनुसार गुरू घासीदास जी का जन्म सोमवार माघपूर्णिमा तदनुसार 18 दिसम्बर 1756 ई.को एक श्रमिक परिवार बलौदा बाजार तहसील के गिरौदपुर गांवमें हुआ था | आज यहीं तिथि सरकारी तौर पर भी मान्य हैं और गुरू घासीदास जी के सम्मान में मध्यप्रदेश, व छत्तीसगढ़ की सरकारों ने 18 दिसम्बर शासकीय अवकाश घोषित किया हैं | गुरू घासीदास जी के अनुयायी भी उपर्युक्त तिथि को स्वीकार करते है | राजमहंत किशन लाल कुर्रे पंथी गीतों में भी इसका उल्लेख है –

सन 1756 अनु.अगहन पुरनमासी |
सोमवार के दिन जम्मो जोग समन सुखरासी ||
कुकराबसतबेर ओहि दिन जन्मय घासी |
सतनाम के बीडा देवे छोडिस जनम के फंसी || (1)

संत गुरू घासीदास जी का जीवन असत्य के साथ सत्य, हिंसा के साथ अहिंसा, अन्याय के साथ न्याय, पशुता के साथ मानवता के संघर्ष की कहानी है | वे जन-जन के हृदय को अपनी पीयूषमयी वाणी से आह्लादित करती है जब–जब अधर्म चरम सीमा पर रहता है तब-तब अनेक महापुरुषों ने अवतरित होकर कर्मों के माध्यम से सत्य को पुन: प्रतिस्थापित किया है तथा स्वस्थय मानव समाज के लिए सर्वस्व अपना जीवन समाज के उत्थान में लगाया था |

यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युत्थानम ऽधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम
परित्राणाय साधुनाम विनाशाय च दुष्कृताम
धर्म सस्थापनार्थय समभ्वामि युगे-युगे || (2)

संत गुरु घासीदास जी ने जाति, धर्म, लिंग, भाषा, संस्कृति आदि की सीमा से परे मानव-जाति, पशु-पक्षी, जीव-जंतु सबके कल्याण की कामना की | ऐसे संत शिरोमणि का जीवन अत्यंत गरीबी, भूख से पीड़ित, बेरोजगारी, अत्याचार से

जीवन व्यतीत किया | रामनारायण शुक्ल के अनुसार- 'भूख से पीड़ित होने के कारण गुरू घासीदास जी चारों भाइयों ने बाद में इसाईधर्म को स्वीकार कर लिया था | छत्तीसगढ़ में अमेरिकन मिशन के प्रवेश की तिथि 31-मई -1868 है जब ओ टी.लोर्ज.रायपुर पहुचे और उन्होंने विश्रामपुर में एक मिशन की स्थापना की | "अन्य हीन जातियों के समान गुरु घासीदास जी या उनके भाइयों को किसी प्रकार की औपचारिक शिक्षा का अवसर नहीं मिला | प्रायः सभी दस्तावेजों में उन्हें ''गरीब, खेतिहर, श्रमिक" **(3)** कहा गया है | चीशोल्म के अनुसार ''अपने समुदाय के अन्य लोगों की तरह गुरु घासीदास अपढ़ और निरक्षर थे |" वे गिरौदपुर के ही मरार गौंटिया के यहाँ बाल श्रमिक होते होते 'वयस्क श्रमिक' बने तथा खेती-किसानी तथा 'बनी-भूती' करते थे | मरार गौंटिया का नाम सतनामी भजनों में गोपाल तथा गोपीचंद मिलता है |

ये गोपीचंद मरार के नांगर फंदाये हे,
अधरे नागर अधरे तुतारी बाबा,
बाबा तैं कैसे नगर चलाये घासी|
ओही समय भा ठाकुर आय, गोपाल ठाकुर,
देख के गोपाल मरार रोवन लागे हो,
अधर म धोती कांध म जनेऊ,
अधर म धोती सुखाय हो || 3

'सत' का व्यवहार में प्रचलित अर्थ 'सत्य' भी है | सत्य के गुणों का स्थिति परम विशुद्ध, परमचैतन्य, प्रकाशवान होती है यहीं ईश्वर का रूप है | सत्य को अनादि, अनंत, अजन्मा, अजर-अमर मन गया है | सत निर्गुण और निराकार है निर्गुण का अर्थ यहाँ गुण विहीन न होकर अनंत गुणों की साम्यावस्था है | सत में अनंत गुण अन्तर्निहित है | परे अनंत गुणों का परिचायक होने के कारण इसका स्वरूप निर्गुण हो जाता है | सत में अनंत आकर अन्तर्निहित है अनंत गुणों की साम्यावस्था होने के कारण सत होती है का स्वरूप निराकार हो जाता है | ''सत्य ही मानव जीवन का आभूषण है' ' एवं सत्य के शिवाय मानव जीवन निरर्थक माना जाता है |

अहिंसा गुरु घासीदास जी का एक और प्रमुख मन्त्र है | दया, प्रेम, करुणा, उदारता, समता एवं बंधुत्व उनके आभूषण हैं | गुरु घासीदास जी ने सर्वाधिक जोर अहिंसा पर दिया है | उनके अनुसार ''जान के मारइ हा तो मारण आय,सपनो घलो मा कोनो ल मारई ह मारण आय' ' ''तोर पीरा ओतकेय आय तजका ओखर अऊ मोर पीरा आय |'' गुरु घासीदास जी के वचन साधारण अवश्य प्रतीत होते है लेकिन 'देखन में छोटे लगे घाव करे गंभीर' की भांति असाधारण प्रभाव उत्पन्न करतें हैं समय दास अविनाशी जी ने अपने महाकाव्य 'गुरु दर्शन' का प्रारंभ ही इसी संबोधन से किया है –

मानवता के सजग प्रहरी गुरुवार तुझे नमन है मेरा |
माँगू इतना ही भारत में हो सत्य अहिंसा का डेरा || (4)

गुरू घासीदास जी ने मूर्ति की उपासना को पूरी तरह समाप्त कर दिया , उनके अनुसार मूर्तियाँ छलावा है | सतनामियों को आदेश दिया गया कि अपने घरों से सभी मूर्तियों को बाहर फेक दें | गांव के पास भी कोई मूर्ति नहीं दिखनी चाहिए | गुरू घासीदास घोर मूर्ति पूजा के घोर कट्टरवादी विरोधी थे | **(5)** वर्तमान समय में मूर्ति – पूजा से साम्प्रदायिक वैमनस्य फैल रही थी | धर्म के ठेकेदार उन्माद के चुल्ले पर स्वार्थ की रोटियां सेक रहे थे | धर्म के नाम पर शोषण और अन्धविश्वास का बोल-बाला हो रहा था | लोग जीवनभर की कमाई को तीर्थ स्थान और तथाकथित साधु- संतों के चक्कर में फूंक रहे है |

नये-नये धर्म और उनके अनुयायी उत्पन्न होकर लोगों को नए-नए ढ़ग से ठग रहे है ऐसे समय में गुरू घासीदास जी का दिया गया सन्देश मूर्ति-पूजा न करो प्रासंगिक सिद्ध होते है इसे अपनाने से मूर्ति-पूजा,अन्धविश्वास और अंध मान्यताएं स्वत:दूर हो जाती है | गुरू घासीदास जी ने सबसे पहले शराब,मांस भक्षण,व्यभिचार से परे सात्विक कर्म और सात्विक धर्म की ओर संचरण का मार्ग प्रशस्त किया | आदर्श शिक्षा की जगह व्यवहारिक शिक्षा पर जोर दिया | गुरू घासीदास जी का आध्यात्मिक आन्दोलन केवल दलित वर्ग तक सीमित नहीं था अपितु उससे उच्च वर्ग की जातियां भी जुड़ गयी थी | इन महत्वपूर्ण प्रारंभिक सफलताओं के बाद घासीदास ने एक सच्चे समाज सुधारक की भांति अन्य सामाजिक बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया | जिनमें स्त्री को टोह्ही के नाम से औरतों का बध, बालविवाह, सतीप्रथा, विधवा विवाह आदि कुप्रथाओं का उन्होंने विरोध किया | औरतों को सभी बुराइयों की जड़ माना जाता था | उन्होंने अपने अनुयायियों से इन बुराइयों से लड़ने का आह्वान किया था | उस युग में केवल पशुबलि ही नहीं प्रचलित थी अपितु अंधविश्वास के नाम नरबलि भी जोरों पर थी इन सबसे उन्होंने मुक्ति दिलाने का प्रयास किया था |

पाखण्ड धर्म गतमंधपरम्पराद्य |
माडम्बरादिमहितं च पुरोहिताद्यै ||
सामाजिकान बह्वलं मनुजस्य धर्मान |
जगर्ति सत्पथ – कातिरशेषलोके || (6)

गुरू घासीदास छत्तीसगढ़ में नारी जाति के प्रथम उद्धारक थे | स्त्रियों की स्वाधीनता और कर्मठता का अधिकार स्त्रियों को मिले इसके लिए वे जागरूक थे | टोहनी घोषित कर स्त्रियों के अपमान और उनके बध के खिलाफ गुरू घासीदास जी ने मुक्ति मार्ग का वीणा उठाया था | विधवा स्त्रियों के ही पुनर्विवाह का अधिकार उन्होंने दिलवाया था | भारतीय नारी का गौरव पुन:महिमा मंडित हुआ | वर्तमान समय में नारी का अपमान तथा समाज में व्याप्त बुराइयों की त्याग किया था | गौतम बुद्ध ने आनंद से कहा यह कि पुरुषों स्त्रियों की ओर न देखें | ठीक इसके विपरीत गुरू घासीदास जी ने स्त्रियों के साथ समान आचरण करने का उपदेश दिया था | यह भी ध्यान देने योग्य बातें है किसे मिलजुल लेते थे | इतना ही नहीं गाँधी विवाहित होते हुए भी ब्रह्मचर्य का पालन करते थे | किन्तु गुरु घासीदास इन सबसे विलग थे अपनी पत्नी सुफरा के प्रति पूर्ण आस्था दिखाते हुए भी वे सम्पूर्ण सामाजिक समानता के आन्दोलन में स्त्री को बराबर का साझीदार मानते थे | गुरू घासीदास के अतिरिक्त 19वीं वे शताब्दी तथा 20वीं शताब्दी के ऐसे सभी समाज सुधारक जो महिलाओं के अधिकारों के प्रति जागरूक थे | उन्होंने अपने वैयक्तिक जीवन में स्त्रियों को अपने से दूर रखा था राजराम मोहन राय ने अपनी पत्नियों से साहचर्य के बिना जीवन यापन करते थे | रामकृष्ण का विवाह नहीं हुआ | स्वामी विवेकानंद एक साधु होते हुए भी स्त्रियों समाज में व्याप्त छुआछूत,मदिरा का सेवन एवं मांस का उपयोग अपनी चरमसीमा पर थी | ऐसे समय में "पर स्त्री को माता जानों, "मांस का त्याग करो" तथा "मादक पदार्थ जैसे शराब का सेवन न करों इत्यादि वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिक सिद्ध होते है | गुरू घासीदास जी की वाणी जयशंकर प्रसाद की रचना "कामायनी" में साकार होती है |

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग-पग तल में |
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में ||" (7)

आज विश्व में पुन:क्रांति की आवश्यकता है | हम भले ही आज राजनितिक रूप से स्वतंत्र हो गए हो किन्तु आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, नैतिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में हमारी पूर्ण आत्मनिर्भरता नहीं है निर्धनता, असमानता, नशाखोरी, भ्रष्टाचार, शोषण, पर्यावरण असंतुलन, आंतकवाद, नक्सलवाद, रिश्वतखोरी, इससे भी बड़ी से बड़ी समस्याएं दिन-प्रतिदिन पैदा हो रही है इन सबका जिम्मेदार मनुष्य है | यदि समूचे मानव समाज में गुरू घासीदास जी की वाणी को आत्मसात कर लिया गया होता तो आज यह स्थिति नहीं होती |आज विश्व के लिए संत शिरोमणि गुरू घासीदासजी का आचरण केवल प्रासंगिक ही नहीं है अपितु आज के सामाजिक और नैतिक ठहराव अपकर्ष और संशयवाद के लिए एक वांक्षित विकल्प भी है |

राष्ट्र जीवन के लिए यह आवश्यक है कि हम मानव मूल्यों को पुन:संरक्षित कर उन्हें सुदृढ़ बनाए | आधुनिक भारत को ऐसे ही संत – महात्माओं के नेतृत्व की आवश्यकता है कि जो "डाइनेमिक" हो जिसमें मानव मात्र के लिए करूणा, दया, माया, ममता हो, जिससे देश में व्याप्त अत्याचार, भ्रष्टाचार और भाई-भतीजावाद से लड़ने की साहस हो, जैसा कि संत गुरू घासीदास जी में था,वे चिर प्रासंगिक है | आज वे इस आधुनिक भारत के लिए ही पुरे विश्व के लिए प्रेरणास्रोत है जिनके पद चिन्हों का अनिशरण कर हम पुरे विश्व और समाज को आगे बढ़ा सकते है |

गुरू घासीदास जी का मानवतावाद सार्वजनिक तथा गत्यात्मक है | वह धर्म और जाति के बन्धनों से परे हटकर सम्पूर्ण मानव समाज के लिए है | उसमें किसी भी प्रकार हठबंदी या भूगोल नहीं है | उनका मानवतावाद आदर्शवादी तथा परमार्थवादी है इनके मूल में वह चेतना है कि जो सामाजिक,नैतिक और सांस्कृतिक संरचना में विचरण करती है | मनुष्य यदि अहं, दंभ और स्वार्थ को त्याग कर औदात्य से जुड़ जाता है तो यह चेतना संपन्न हो सकता है | गुरू घासीदास जी राष्ट्र की आध्यात्मिक धरोहरों में से एक है | ठीक उन अवतारों के सामान जिन्होंने भारतीय जनता के आध्यात्मिक जीवन को अभिव्यक्त किया | उसे प्राणवान बनाया | भारत के आध्यात्मिक संपन्न असाधारण पुरुषों से कुछ दशक पूर्व ही वे 19वीं शताब्दी के प्रथम चरण में विद्यमान थे भारतीय नवजागरण का स्वर्ण युग था जो गुरू घासीदास से ही प्रारंभ हुआ था | गुरू घासीदास के बाद पैदा होने वालों मनीषियों में स्वामी जयप्रकाश नारायण,राजाराम मोहन राय, महर्षि दयानंद, स्वामी विवेकानंद तथा रामकृष्ण आदि प्रमुख थे | **(8)**

समग्र रूप से गुरू घासीदासजी अपने आप में एक विलक्षण अप्रतिम, अद्वितीय एवं अन्यान्य संत थे | इनका दृष्टिकोण जीवन के प्रति स्वस्थ मानवतावादी एवं सतनाम दर्शन से लबालब है | उनकी प्रज्ञा, करुणा, दया, प्रेम, सत्य, अहिंसा का भाव समाप्त कर मानव जीवन जगत में व्याप्त है वे अन्य संतों की परम्परा से हटकर है | संतोधि में वे बुद्ध, आचरण में महावीर, चरित्र में वे राम है तो प्रज्ञा में कृष्ण समाज सुधारक में कबीर, तो विनम्रता में रैदास, कष्टों को सहने में वे यीशु है तो सरल जीवन में पैगम्बर मोहम्मद,संगठन करने में वे गुरूनानक एवं गुरुगोविंद सिंह है तो अव्यवस्था एवं अमानवीयता के विरुद्ध तांडव करने वाले शिव भी है | उनका व्यक्तित्व सामाजिक,धार्मिक,आर्थिक,नैतिक एवं व्यवहारिक सभी क्षेत्रों को अपने अन्दर समाहित किए हुए है | उन्होंने समग्र जीवन को सुखी एवं आंनदपूर्ण बनाने के लिए ना केवल उपदेश दिया अपितु जीवन के विशाल रण-भूमि में सत्य के सेनापति बनकर समाज में व्याप्त सभी बुराइयों के खिलाफ संघर्ष का शंखनाद किया |

गुरू घासीदास जी जाति-पांति के नियमों के कट्टर विरोधी थे उनकी दृष्टि में सब मनुष्य समान है तथा भगवत भक्ति का अधिकार केवल कुलीन वर्गों के लिए ही नहीं बल्कि सभी वर्गों के लिए है, जीवोत्पति की दृष्टि से वे जाति प्रथा को अप्राकृतिक मानते थे | पुराना वेदांत मानव को उदभिज्य मानता है जबकि गुरू घासीदास जी ने वेदांत के अनुसार सभी मानव योनिज है | भिन्न शरीरों को धारण करने वाले तथा वंश क्रमानुसार किसी जाति में जन्म लेने के कारण लोग एक दूसरे को भिन्न मानने लगे |

निर्गुण जाति व्यवस्था का उन्मूलन करता है|अलगाव की प्रथाओं का खंडन करता है | बाह्य आडम्बरों के निराकरण की अपील करता है और अंत में कथनी-करनी और रहनी की व्यवस्था करता है इससे उसने एक नया समाज बनाया जो 'सत्संग' के नाम से प्रसिद्ध है | (8) आधुनिक युग में गुरू घासीदास जी एक सशक्त क्रन्तिकारी तथा आध्यात्मिक गुरू थे | वे राजाराम मोहन राय से बहुत पहले नवजागरण का सन्देश लेकर अवतरित हुए थे राजाराम मोहन राय पश्चिमी विचारधारा और जीवन पद्धति से अनुप्राणित होकर ही नवजागरण के सन्देशवाहक बने थे | जबकि गुरु घासीदास जी ने निरक्षर तथा हलवाहे की स्थिति में ग्रामीण परिवेश से जुड़कर विशुद्ध भारतीय चिंतन ही प्रस्तुत किया था | यही कारण है कि चार्ल्स ग्रांट ने गुरू घासीदास को मध्य प्रदेश का 'आश्चर्य' माना था | इस अंचल के असल आश्चर्य अभी तक धरती के नीचे दबे हुए है | गुरु घासीदास जी उनमें से एक है जिन्होंने छत्तीसगढ़ के भूमि-दासों को जगाया और जाति-प्रथा को समाप्त कर सामंतवादी समाज की रचना की | गुरु घासीदास जी दलितों की हीन स्थिति से बहुत चिंतित थे,क्योंकि समय के प्रवाह से समाज में उनकी स्थिति अत्यधिक गर्हित हो चुकी थी | वे अज्ञानता, बीमारी, शोषण, मांसभक्षण, मदिरापान, अन्धविश्वास जैसी अनेक नैतिक बुराइयों से जुड़ गये थे |

गुरू घासीदास जी विपन्न स्थिति से बहुत दु:खी थे | उच्च आध्यात्मिक विरासत के विददमान के बावजूद दलित शोषण के शिकार थे तथा उनका जीवन गुलामी से भी ज्यादा बदत्तर हो गया था | उन्होंने अपनी आत्मा को मार डाला था भारतीय समाज में उनके जैसा आज तक दलितों का कोई मसीहा पैदा नहीं हुआ न होगा | उन्होंने अपने दर्शन में लोक की विविध प्रचलित धाराओं का समन्वय किया |इसी लिए उनका मत उपनिषदों के अधिक करीब है? सच तो है कि उन्होंने एक 'लोकदर्शन' का आविष्कार किया था उन्होंने अपने अनुभव में जो देखा उसी की शिक्षा दी थी | **(9)**

गुरू घासीदास जी ने गौतम बुद्धके समान दो प्रकार के दु:खों का अनुभव किया था-सामाजिक दुःख तथा आर्थिक दुःख | प्रथम प्रकार का दुःख जाति-व्यवस्था के अंधस्तलमें जन्म लेने से सम्बद्ध था वेदों की इस सुरम्य धरती में जन्म लेने के साथ ही एक भारतीय आत्मा शूद्र या अछूत घोषित हो जाती थी और फिर वह हीनभावना के कारण दब जाती थी दुसरे प्रकार का दुःख यहां की निपट दरिद्रता थी जीवन निर्वाह के लिए लोगों को रोटी, कपड़ा और मकान भी मयस्सर नहीं था |गुरू घासीदास जी ने दोनों प्रकार के दुखों से मुक्ति के लिए संघर्ष किया और प्रभुत्ववादी पारम्परिक व्यवस्था को उलट –पलट दिया | दलितों का आचरण सात्विक हो गया और ये भुमिदास हजारों गांवों के स्वामी हो गये | गौतम बुद्ध की अधोलिखित भविष्यवाणी सही साबित हुई –

"द्वेव वण्णअय्यो चेव दासो च | अय्यो हुत्वादासो होति |
दसो हुत्वाअय्यो होतिती|" अर्थात दो ही वर्ण होते है – आर्य तथा दास |
आर्य होकर दास बनते है, दास होकर आर्य बनते है |" (10)

मानवतावाद एक दार्शनिक तथा आध्यात्मिक आन्दोलन है जो नैतिक और आध्यात्मिक गुणों का समर्थन करते हुए उन्हें कार्यान्वित करने का प्रयास करता है ये मानवीय मूल्य है सत्याचरण, निश्छलता, प्यार, निर्धनों, निरक्षरों और अपंग लोगों के प्रति सहानुभूति, त्याग, समर्पण तथा नैतिक ईमानदारी | गुरू घासीदास जी के दर्शन में एकेश्वरवाद तथा मानवतावाद का एक बेजोड़ मिश्रण हमें देखने को मिलता है इसी लिए हमने उसे "आध्यात्मिक मानवतावाद" कहा है | आध्यात्म के रूप में यह एकेश्वरवाद के अधिक निकट है | इसके अनुसार ब्रह्म अनुभवातीत तथा अन्तर्यामी दोनों ही इसीलिए है क्योंकि उसमें कृपा,करुणा और प्यार है | संसार ब्रह्मा की ही वास्तविक अभिव्यक्ति है | गुरू घासीदास जी में निष्कपट ईमानदारी थी, बौद्धिक शुद्धता थी और परमतत्व के प्रति पूर्ण समर्पण का भाव था अपनी आध्यात्मिक शक्तियों के प्रकाश से वे छत्तीसगढ़ प्रदेश ही नहीं पुरे विश्व के गहन अंधकार को चीरते हुए चले गये और सन 1820 ई. में वे जब गिरौदपुर में अवतरित हुए तब तक जनता उन्हें अवतार मन चुकी थी |

सत्य का अन्वेषण और ज्ञान की प्राप्ति बिना गुरू कृपा के संभव नहीं है | नामदेव के लिए तो गुरूशब्द 'वैकुण्ठ' की सीढ़ी के सामान है "गुरू की शब्द वैकुण्ठ निसरनी" सद्गुरु की कृपा से ही सभी संशय मिटते है | व्यक्ति यम भावना से मुक्त होता है तो उसे "निर्वाण" का पद प्राप्त होता है| गुरु की आध्यात्मिक शक्ति शिष्य के लिए प्रबल प्रेरणा का कम करती है | कबीर ने गुरु का वर्णन उन्मुक्त कंठ से किया है –

"कबीर ते नर अंध है गुरु को कहते और |
हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहीं ठौर ||" (11)

हिन्दू धर्म शास्त्रों में अनेक प्रकार के अवतारों का विवरण है, यथा अंशावतार, कार्यकारणवतार, आदेशावतार, कलावतार, व्यहावतार, भक्तावतार तथा पूर्णावतार आदि | गुरू घासीदास जी 'भक्तावतार' थे | इन सभी अवतारों को धर्मशास्त्रों में 'पुरुषोतम' कहा गया है | यह पुरुषोंतम अपनी अंतर्यामी शक्ति से पुरुष को प्रेरित करता है | यह 'माया' की शक्ति पर विजय प्राप्त का ही पुरुषोतम बनता है | वेदव्यास ने 'महाभारत' में कहा है |

"कृष्णास्तु भगवान स्वयंभू |"

गुरू घासीदास अत्यधिक आकर्षक व्यक्तित्व और क्रियात्मक चरित्र के धनी थे उनका मस्तिष्क अत्यधिक उर्वर था वे उठारचेता थे उनके व्यक्तित्व में इन्हीं नैतिक तथा आध्यात्मिक गुणों के कारणही छत्तीसगढ़ में सामाजिक,धार्मिक तथा सांस्कृतिक पुनर्जागरण की स्थिति आयी थी | हिंदुत्व के सुधार और परिवर्तन में उनका योगदान इतना महत्वपूर्ण था कि उन्हें हिन्दू सुधारकों के बीच एक महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है | गुरू घासीदास जी के कार्य बहुआयामी इन्द्रधनुषी है वे ऐसे प्रिज्म की भांति दिखाई देते है जिस पर सूर्य की किरणों के पड़ने से सतरंगी शोभा बिखर जाती है | गुरू घासीदास जी भारतीय उपमहाद्विप में (प्रजातांत्रिक क्रांति के अग्रदूत थे उनके द्वारा प्रवर्तित सतनामी विद्रोह ने शक्ति को धूल चटाने का पहला पाठ पढ़या | सतनामी विद्रोह ने शक्तिशाली तथा धनाढ्यों की नींद हराम कर दी थी जब प्रजातंत्र के सुविकसित विचारों का उदय ही नहीं हुआ था | उस समय इन दलितों के पास कोई अन्य तरीका भी नहीं था) इसीलिए ये राजनीति के सामंती तरीकों का उपयोग करते थे|

आज हम जिस मोड़ पर खड़े है उस मोड़ पर गुरू घासीदास की याद आ जाना अचानक नहीं है | दूषित राजनीति, पतनशील आस्था, लगातार चुकते मूल्य और बढती जातीय असमानता इस माहौल में संघर्ष समन्वय और सिध्दांत के सन्दर्भों में गुरू घासीदास जी अनायास हस्तक्षेप करते है रह-रह कर यह सवाल भी मन में क्रौधता है कि आखिर उस रचनाकर से कहां कुछ ऐसा चूक गया जिसमें उनके सपनों को धूमिल कर दिया या फिर छत्तीसगढ़ियों में ही विकार आया कि गुरू घासीदास जी दफना दिए गए, सतनामियों तक संकुचित हो गए, या फिर अप्रासंगिक लगने लगे ?

छत्तीसगढ़ में दलितों में ईसाइयत का प्रसार सतनामी आन्दोलन की ही प्रतिकृति है ईसाई बनकर दलित यह आशा करता है कि वह हिंदुत्व के सामाजिक बन्धनों से मुक्ति का रास्ता अपना लिया है | यदि हम छत्तीसगढ़ के पांच हजार वर्ष के इतिहास पर दृष्टिपात करे तो संत का ऐसा बहुआयामी व्यक्तित्व नजर नहीं आता जो मानव मूल्यों के व्यवहारिक पहलुओं में स्थित शराब, नशाखोरी, मांस, मदिरा, हिंसा, अत्याचार के विरुद्ध निचले स्तर से ही एक विशाल क्रांति खड़ा कर सके तथा सतनाम को पूरे भारत ही नहीं अपितु विश्व पटल पर प्रतिस्थापित करें |

"सतनाम-सतनाम नहीं, सब नामों में सार
सत्य के कारण संतजन उतरन भाव से पार ||
कहे गुरू घासीदासजी सत्य नाम एक आधार |
सतनाम अमृत पियो जियो वर्ष हजार ||"

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुरु घासीदास: संघर्ष समन्वय और सिद्धांत – डॉ. हीरालाल शुक्ल, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पृ.56
2. गीता से
3. वही. पृ. 57-58
4. वही.
5. गुरु घासीदास उपर्युक्त पृ. 78
6. वही. पृ. 167
7. वही. पृ. 170
8. वही. पृ. 175
9. वही. पृ. भूमिका से पृ. vi-vii
10. वही. पृ. भूमिका से पृ. vii-
11. वही. पृ. 176